Pradeep Raj P. “ Search for the cultural identity of India in contemporary Hindi poetry (With special reference to 1980-2000)” Thesis. Department of Hindi, University of Calicut, 2017

प्राक्कथन

समकालीन कविता आम आदमी के संघर्ष का दूसरा नाम है। समकालीन सामाजिक, राजनीति एवं आर्थिक परिस्थिति में व्यक्ति की अभिव्यक्ति बनकर यह कविता उसके सुख–दुख, पीड़ा, आत्मविश्वास, डर आदि भावों को शब्दबद्ध करती है। वह बाज़ारवादी संस्कृति की छिपी साजिश का पर्दाफाश करती है। समकालीन कविता इंसानियत के प्रति शोषण के खिलाफ एक प्रतिरोधी स्वर है।

समकालीन कविता में मेरी विशेष रुचि रही है। इसके अध्ययन के दौरान इन कविताओं को बारीकी से पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ था। समकालीन कविता की भाषा एवं शैली मुख्यतः लोक संस्कृति से ली गई है। भारत की संस्कृति और उसकी अस्मिता भी इसी लोक संस्कृति से अपनी ऊर्जा ग्रहण करती है। अतः समकालीन कविता और भारत की संस्कृति पर विशेष अध्ययन की जरूरत का एहसास हुआ।

सन् 1980 और 2000 के बीच हिन्दी कविता एक बड़े बदलाव से गुज़र रही थी। कवियों के सामने नई चुनौतियॉ आने लगीं। भाषा, विषयवस्तु, शैली, गठन आदि सभी क्षेत्रों में हिन्दी कविता सकारात्मक परिवर्तन की ओर अग्रसर हो रही थी। समकालीन कविता के इस नए तेवर को सही तौर पर चिन्हित करने तथा जन सामान्य के शोषण के विरुद्ध प्रतिरोध के रूप में इसकी भूमिका की अभिव्यक्तिअध्ययन का विषय है। इस संदर्भ में जहॉ भारत की संस्कृति को सांप्रदायिक शक्तियॉ

गलत तरीके से जनता के सामने प्रस्तुत कर रही हैं वहॉ समकालीन कविता और भारत की संस्कृति के अभेद्य संबंध को दर्शाकर उनके वास्तविक लोकतांत्रिक रूप को प्रस्तुत करना समय की मॉग बन गई है। अतः उपर्युक्त विषय को अपने शोध प्रबन्ध के लिए चुना गया है। 'समकालीन कविता में भारत की सांस्कृतिक अस्मिता की तलाश (सन् 1980 से 2000 तक के विशेष संदर्भ में)' शीर्षक इस शोध प्रबंध को अध्ययन की सुविधा केलिए चार अध्यायों में बॉटा गया है।

पहला अध्याय है–''भारतीय संस्कृति और अस्मिता'', जिसमें संस्कृति, भारत की संस्कृतिऔर अस्मिता पर विचार किया गया है।

दूसरा अध्याय है–''भारत का सांस्कृतिक परिवेश : 1980 के बाद'',जिसमें 1980 के बाद भारत के सांस्कृतिक परिवेश पर एक नज़र डाली गई है।

तीसरा अध्यायहै–''हिन्दी कवितासन् 1980 तक :प्रमुख प्रवृत्तियॉ'',जिसमें1980 तक के हिन्दी कविता और उसकी प्रमुख प्रवृत्तियों का अध्ययन किया गया है।

चौथा अध्याय है–''समकालीन कविता में भारत की सांस्कृतिक अस्मिता : सन् 1980 से 2000 तक'',जिसमें 1980 से 2000 तक के समकालीन कविता में भारत की सांस्कृतिक अस्मिता की तलाश की गई है।

उपसंहार में प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष को प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबंध कालिकट विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर

एवं अध्यक्ष डॉ. प्रमोद कोव्वप्रत जी के निर्देशन में संपन्न हुआ है। विषय चयन से लेकर हर कदम पर वे मुझे सहायता देते रहे हैं। उनके बहुमूल्य सलाहों एवं सुझावों से ही यह अध्ययन पूर्ण हो पाया है। उनके प्रति मैं सदैव आभारी रहूँगा।

विभाग के अन्य गुरुजनों के प्रति मैं अपना आभार प्रकट करता हूँ कि वे मुझे समय समय पर प्रोत्साहन देते रहें।हिन्दी विभाग के पुस्तकालय के कर्मचारियों के प्रति भी मैं आभारी हूँ।अपने माता–पिता के प्रति मैं आभारी हूँ जिनके आशीर्वाद के बिना यह संभव नहीं हो पाता।अपनी पत्नी के प्रति मैं आभारी हूँ जिसकी प्रेरणा, स्नेह एवं साथ के बिना यह संभव नहीं हो पाता।मेरे अन्य मित्रों के प्रति भी मैं आभारी हूँ जिनके बहुमूल्य सुझावों से मुझे प्रेरणा प्राप्त हुई है।

यह शोध प्रबंध सविनय विद्वानों के सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ। चूँकि विषय काफीव्यापक है इसलिए इसकी कमियों एवं सीमाओं के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

हिन्दी विभाग

कालिकट विश्वविद्यालय

सविनय

प्रदीप राज पी.